स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में राजनैतिक रूचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव

डॉ0 गार्गी ओझा

प्रवक्ता शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),
इलाहाबाद

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपने चरित्र एवं भविष्य का निर्माण करता है। मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास का प्रयास अनौपचारिक तौर पर स्कूली शिक्षा के दौरान होता है। विद्यार्थी महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर विविध क्रियाकलाप में भाग लेता है उसी में से एक है राजनीतिक क्रियाकलाप उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य है छात्रों के मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक विकास करना। स्वतंत्रता प्राप्त के बाद भारतीय समाज संस्कृति, रहान–सहन और राजनीतिक विचार धाराओं में अनेकों परिवर्तन हुस हैं। जनमानस के जीवन स्तर, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विचारों और आर्थिक जटिलताओं के कारण बहुत से नये समीकरण बने हैं। इस समय भी हमारा देश और समाज निन्तर बड़े परिवर्तन से गुजर रहा है। पुरातन छूटता जा रहा है और अनेक विषमताओं को पार करता हुआ नूतन उभर उठने की प्रक्रिया में है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति को यह निर्णय लने में कठिनाई हो रही है कि पुरातन एंव नमूतन के बीच कौन सा मार्ग अपनाया जाये। जिससे समाज और देश की समस्याएं सुलझ सकें और देश उन्नति की ओर अग्रसर हो सके। इन कठिनाइयों का हल एक सही दिशा में शिक्षित कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासित छात्रों द्वारा ही संभव है।

आज के छात्र कल के नागरिक हैं। देश की प्रतिष्ठा, विकास, एकता, रक्षा एवं सुप्रभुता बनाये रखने का दायित्व उन्हीं को निभाना है, किन्तु भारत ही नहीं समकालीन विश्वभर के छात्रों का अधिकांश भाग अनुशासनहीनता, क्षेत्रवाद तथा समाम्प्रदायिकता के उन्माद जैसी संकीर्ण भावनाओं से ग्रसित है। उनकें निरन्तर नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है और वे स्वार्थ, छल, कपट तथा विकृत राजनीतिक विचारधारा की ओर उन्मुख होते हुए प्रतीत हो रहे हैं। छात्र एकता जिन्दाबाद का नारा लगाते हुये विद्यार्थियों के विशाल समूह सड़कों पर प्रदर्शन करते दिखाई पड़ते हैं कहीं उर्दू या अंग्रेजी के विरोध में सार्वजनिक सम्पत्ति को तोड़ते हैं। कहीं आरक्षण समर्थक तो कहीं आरक्षण विरोधी छात्रों के समूह नैतिकता और मानव मूल्यों को भुलाकर मरने–मारने पर उतारू हैं। आज का विद्यार्थी विश्वविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ छात्र होने की अपेक्षा अमुक दल का अध्यक्ष, मंत्री लिखे जाने पर अधिक गौरव महसूस करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा गौण पर राजनीति प्रधान हो गयी है। अब विद्यार्थी और रजानीति एक

दूसरे के निकट आ गये हैं तो विद्यार्थीयों की राजनीति में रूचि भी विशेष विचारणीय हो गई है। अतः राजनीतिक रूचि के वर्तमान पर विचार करने से पूर्व छात्र राजनीतिक के अतीत और उसके निरन्तर बदलते हुए स्वरूप को समझना अत्यंत आवश्यक है।

भारत में छात्रों की राजनीतिक में पहली बार सन् 1905 में बंगाल के विभाजन के समय हुआ। जब कलकत्ता के छात्रों ने इस विभाजन के विरोध में लार्ड कर्जन की अर्थी जलाई और परीक्षा का बहिष्कार किया तत्तपश्चात् सन् 1920 में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में आल इडिया स्थूडेन्टस यूनियन बना। लाला जी के आह्वान पर लाखों छात्रों ने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। गांधी जी के द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोनल और नागकिग आन्दोनल तथा भरत छोड़ो आन्दोनल को सफल बनाने में विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1936 में कम्युनिष्टों ने ''आल इण्डिया स्थूडेन्ट्स फेडरेशन'' की स्थापना की। सन् 1946 में अखिल भारतीय कांग्रेस ने जवाहर लाल नेहरू के विचार पर यह निर्णय लिया कि छात्रों को व्यवहारिक रूप से राजनीतिक में भाग नहीं लेना चाहिए। अतः आल इण्डिया स्थूडेन्ट्स कांग्रेस को भंग करके उसके स्थान पर नेशनल यूनियन ऑफ स्थूडेन्ट बनाई गयी जो एक गैर राजनैनिक संगठन था। इसके पश्चात् देश आजाद हो गया और अनेक भारतीय राजीनतिक दलों का उदय हुआ और सभी दल छात्र शक्ति को अपने पक्ष में करने के लिए अपनी–अपनी छात्र इकाईयों का निर्माण करते गये। समय–समय पर राजनैतिक दलों के विभाजन एवं गठबंधन के परिणामस्वरूप नये–नये विद्यार्थी संगठन भी बनते गये। समाजवादी दल की ''समाजवादी युवजन सभा'' भारतीय जनता पार्टी का ''अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद'' कांग्रेस की राष्ट्रीय छात्र संगठन कांग्रेस (ई), कम्युनिष्टों की आइसा, आदि छात्र इकाइयाँ राजनैतिक दलों का ही अंग है।

मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास का प्रयास अनौपचारिक तौर पर स्कूली शिक्षा के दौरान होता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों के मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक, बौद्धिक एवं अध्यात्मिक विकास करना।

शिक्षा राष्ट्रीय विकास और अध्ययन की आधारशिला है शिक्षित समाज पर राष्ट्र का आर्थिक और औद्योगिक विकास निर्भर है। शिक्षा पर होने वाला राष्ट्रीय का आर्थिक और औद्योगिक विकास निर्भर है।

वर्तमान समय में विशविद्यालयों–महाविद्यालयों की राजनीति राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है। आज विभिन्न दल विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों मे अपने प्रतिनिधि चुनाव मे उतारते हैं जिनमें लखनऊ, इलाहाबाद, दिल्ली एवं जे0एन0यू0 विश्वविद्याालय का अध्यक्ष पद राष्ट्रीय स्तर की राजनीति को प्रभावित करता है तथा इसी राष्ट्रीय पार्टियों की छवि का आंकलन हो जाता है।

जिन युवा छात्रों मे राजनैतिक अभिरूचि पायी जाती है उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन भी अन्य छात्रों से भिन्न पाया जाता है। वास्तव में युवा छात्र–छात्राओं में राजनैतिक अभिरूचि एक मनो–सामाजिक प्रत्यय है। जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में किये जाने वाले व्यवहार से है। इस विभिन्न परिस्थितियों का राजनैतिक अभिरूचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन से भी सम्बन्ध होता है। अतः छात्रों की राजनीतिक रूचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।

समस्या एवं महत्व

शिक्षा राष्ट्रीय विकास और अध्ययन की आधारशिला है शिक्षित समाज पर राष्ट्र का आर्थिक और औद्योगिक विकास निर्भर है। शिक्षा पर होने वाला राष्ट्रीय का आर्थिक और औद्योगिक विकास निर्भर है। शिक्षा पर होने वाला राष्ट्रीय व्यय महत्वपूर्ण होता है। भारत में शिक्षा पर व्यय का एक बहुत बड़ा भाग लगभग 70 प्रतिशत (नयी शिक्षा नीति 1986 के अनुसार) व्यर्थ हो जाता है अथवा अवरूद्ध हो जाता है। इसका बड़ा कारण विश्वविद्यालय या महाविद्यालय प्रशासन की अकर्मण्यता या उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार होता है, जिसको मजबूत छारसंघ के द्वारा कम किया जा सकता है। अतः शिक्षा पर राष्ट्रीय व्यय की अवरूद्धता और व्यर्थता को रोकने के लिए ऐसे शोध कार्यों की आवश्यकता है जो उपर्युक्त कारणो पर सार्थक प्रभाव डाल सके।

छात्रों की राजनीतिक रूचि के कारण उत्पन्न अनुशासनहीनता की समस्या अब कक्षाओं अथवा महाविद्यालय परिसर तक सीमित न रहकर बाह्य वातावरण में भी फेल हो चुकी है। अनुशासनहीनता की जो भावना छात्रों में निम्न कक्षाओं में जन्म लेती है वह महाविद्यालय स्तर पर पहुँचत–पहुँचते उग्र रूप धारण कर लेती है। अनेकों शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और पत्रकारों द्वारा छात्रों की राजनीतिक रूचि के विषय में बताये गये कारण अत्यधिक तिषम एवं विरोधी है।

मिसबर्न (1976) ने कहा– ''यदि छात्रों को शिक्षण संस्था के विभिन्न अंगों में अध्कितम भागीदारी दे दी जाये तो छात्र राजनीति से विमुख होकर व्यवसायी एवं अर्द्धव्यवसायी बन सकते हैं। यदि इस विषय पर गहन चिन्तन किया जाये तो स्पष्ट है कि छात्रों की राजनीतिक रूचि का मूल कारण तथा शोध क्रियाकलाप उसका परिणाम है।''

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों से य प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में लगभग समस्त साहित्य छात्र राजनीति से संबंधित है। छात्रों की राजनीतिक रूचि पर या तो कार्य हुआ ही नहीं है या उपलब्ध निष्कार्षों में विरोधाभाष है। अतः प्रस्तुत अध्याय मे महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की राजनीतिक रूचि का अध्ययन संकाय, लिंग, निवास सीान, परिवार के स्वरूप, व्यवसाय आय और जाति के आधार पर किया गया है, जिससे महाविद्यालय स्तरीय विद्यार्थियों की राजनीतिक रूचि के विषय में सार्थक और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो सके। यह जानकारी प्रशासन एवं शिक्षाविदों को शिक्षा पद्धति में देश–काल एवं परिस्थिति के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करके ऐसी शिक्षा नीति बनाने में सहायता कर सकेगी जिससे महाविद्यालयों के परिसर स्वच्छ वातावरण और उपयोगी शिक्षा का केन्द्र बन सके।

क्योंकि विद्यार्थियों का रूचि विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न होता है जिसके परिणामस्वरूप युवा छात्र–छात्राओं राजनैतिक रूचि भी भिन्न होता है । इसलिये प्रत्येक छात्र–छात्राओं का उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर प्रभाव पड़ता है, यह एक अध्ययन का विष्य है।

राजनैतिक / राजनीतिशास्त्र

राजनैतिक अभिरूचि ज्ञान की वह शाखा है जो यह बतलाती है कि राजनीतिक व्यवस्था पर सामाजिक परिवेश का क्या प्रभाव पड़ता है। वह इस बात को भी स्पष्ट करती है कि आने वाली पीढ़ी पर किस सीमा तक और किस प्रकार पुरानी पीढ़ी के राजनीतिक विश्वासों को लेकर आगे बढ़ती है और उसमें किस प्रकार से समायोजन सीापित करती है।

जिन छात्र–छात्राओं में राजनीति के प्रति आकर्षण होता है और वे महाविद्यालयों में होने वाले राजनैतिक क्रियाकलापों में भाग लेते हैं। छात्रों मे उत्पन्न ऐसी रूचि को राजनैतिक रूचि कहा जाता है।

आर0जी0 गैटेल महोदय के शब्दों में, ''राजनीतिशास्त्र ऐसा विज्ञान है जिसके अन्तर्गत राज्य के अति वर्तमान और भविष्य तथा राजनीतिक संगठन और राजनीति के मूल तत्वों का संगठन किया जाता है।''

उद्देश्य –

प्रस्तावति लघुशोध के अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. लिंग, क्षेत्र एंव वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की राजनैतिक अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. लिंग, क्षेत्र एंव वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. लिंग, क्षेत्र एवं वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन का अध्ययन करना।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. लिंग के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एव समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एव समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
7. वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एव समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तावित शोध के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

1. लिंग, क्षेत्र, एवं वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की राजनैतिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. लिंग, क्षेत्र, एवं वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. लिंग, क्षेत्र, एवं वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. लिंग के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

6. क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
7. वर्ग के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राजनैतिक अभिरूचि का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

किशोरी के विकास के दूसरी प्रमुख प्रणाली विद्यालय पर लागू किया। यह देख गया कि परिवार व विद्यालय दोनों जगह निम्न स्तर के सामाजिक वाले विद्यार्थियों में निम्न स्तर के समायोजन वाले विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी जबकि दोनों जगह उच्च स्तर के समायोजन वाले विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक उपब्धि पायी गयी।

सिंह, चन्द्रशेखर (2013) ने छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय से ''बी0एडद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्रओं की राजनीतिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन'' किया एवं निष्कर्ष के रूप में पाया कि –

1. बी0एड0 कालेज में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के राजनैतिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहां पूर्व कल्पित शून्य की परिकल्पना की पुष्टि हुई है।
2. बी0एड0 कालेज में अध्ययनरत कला वर्ग के छात्र एवं विज्ञान वर्ग के छात्र के राजनैतिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया। अतः यहां पूर्व कल्पित शून्य की परिकल्पना की पुष्टि हुई है।
3. कला वर्ग की छात्राओं एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं पर राजनैतिक रूचि का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि उनके बीच राजनीतिक रूचि में कोई अन्तर नहीं है। अतः यहां पूर्व कल्पित शून्य की परिकल्पना की पुष्टि हुई है।
4. बी0एड0 कालेज में अध्ययनरत कला वर्ग के छात्रों एवं कला वर्ग की छात्राओं पर राजनैतिक रूचि का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि उनके बीच राजनैतिक रूचि में कोई अन्तर नहीं है।
5. बी0एड0 कालेज में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्रों एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं पर राजनैतिक रूचि में अन्तर नहीं पाया गया।

कुमार, मनीष (2013) ने नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय से अपना लघुशोध प्रबन्ध ''विश्वविद्यालय स्तर पर छात्र संघ के औचित्य एवं कार्यो का समीक्षात्मक अध्ययन'' किया एवं निष्कर्ष में पाया कि –

विश्वविद्यालय स्तर पर कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के छात्र/छात्रायें छात्र संघ के आवश्यकता के प्रति सकारात्मक अभिवृति रखते है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के छात्र/छात्रायें छात्र संघ के स्वरूप एवं संगठन में सुधार की आवश्यकता पर सहमत है। विश्वविद्यालय स्तर पर कला संकाय के एवं विज्ञान संकाय के छात्र/छात्रयें, छात्र संघ के कार्यों से संतुष्ट है। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रसंघ के प्रति कला संकाय के छात्र तथा छात्राओं की अभिवृति में अन्तर नहीं है। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रसंघ के प्रति विज्ञान संकाय के छात्र तथा छात्राओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

अनुसंधान अभिकल्प

1. **शोध विधि –** प्रस्तावित शोध में 'सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

2. **प्रयुक्त मापनी –**

(1) ''**राजनैतिक अभिरूचि प्रश्नावली**'' – डॉ सुरेश्ज्ञ कुमार सिंह (शिक्षा विभाग), संजय टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दौसा (राजस्थान) एवं डॉ0 बी0बी0 पाण्डेय (शिक्षा विभाग), दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा निर्मित

(1) ''**राजनैतिक अभिरूचि प्रश्नावली**'' – छात्र–छात्राओं के राजनैतिक अभिरूचि का समायोजन पर प्रभाव को मापने के लिए प्रमोद कुमार (विभागध्यक्ष) मनोविज्ञान विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ, विद्यानर द्वारा निर्मित

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- अस्थाना, डा0 विपिन (2009), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक, आगरा – 2
- गुप्ता, एस0पी0 (2001), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- नारंग, ए0एस0(2005), भारतीय शासन एवं राजनीति, गीताजलि पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
- कुमार, मनीष (2013), ''विश्वविद्यालय स्तर पर छात्र संघ के औचित्य एवं कार्यों का समीक्षात्मक अध्ययन'', अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- लौहमेन, ब्रेन्ड जे0 कौरा, शैल्वी ए न्यूमैन बारबरा एम (2007), ''मैच्ड ओ मिस मैच्ड इनवायरमेंट दी रिलेशनशिप ऑफ फेमली एड स्कूल डिफरोन्शीएसन टू ढडोलसेट्स साइकोलॉजिकल एडजस्टमेंट जर्नल ऑफ यूथ एण्ड सोसायटी व 39 पेज 3–32
- शर्मा, आर0ए0 (2013), शिक्षा अनुसंधान के मूलतत्त्व एवं शोध, आर0लाल, बुक डिपो मेरठ।
- सिंह, चन्द्रशेखर (2013), ''बी0एड0 माहाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की राजनीतिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन'' छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।